शिव कैलाश यादव

पारिवारिक विघटन की त्रासदी और आपका बंटी

मन्नू भंडारी बीसवीं शताब्दी की एक महत्वपूर्ण महिला लेखिका हैं। इन्होंने उपन्यास, नाटक, कहानी इत्यादि विधाओं पर अपनी महत्वपूर्ण लेखनी को चलाया है। उपन्यासों में महाभोज, आपका बंटी, एक इंच मुस्कान इनके महत्वपूर्ण उपन्यास हैं। जिसमें इनकी प्रसिद्धि का आधार आपका बंटी बना। जो कि एक बच्चे को केंद्र में रखकर लिखा गया मनोवैज्ञानिक उपन्यास है। कहानियों में मैं हार गयीं, यही सच है, एक प्लेट सैलाब, तीन निगाहों की एक तस्वीर व त्रिशंकु इत्यादि इनकी महत्वपूर्ण कहानियां है।

साहित्य मूलतः युग संदर्भ की देन है। जिसमे सामाजिक प्रवृत्तियों के साथ–साथ परिवर्तित होते मानव मूल्यों, संवेदनाओं, मनोविकारों, विसंगतियों, विडंबनाओं, अवरोध–प्रतिरोध, आशा–आकांक्षाओं, आदि के परिवर्तित होते स्वरूप को रेखांकित किया जाता रहा हैं। यही कारण हैं कि साहित्य में मानव जीवन व उसके जीवन से जुड़े तमाम उतार–चढ़ाव स्पंदित होते रहते हैं। इन्ही उतार–चढ़ाव के बीच महेंद्र कुमारी अर्थात मन्नू भंडारी का बहुचर्चित व बहुपठित उपन्यास आपका बंटी आता हैं। जो विषय वस्तु की दृष्टि से मनोवैज्ञानिक उपन्यास होने के साथ –साथ एक पारिवारिक जीवन की त्रासदी भी हैं। और यह त्रासदी पढ़े लिखे ओहदेदार महानगरीय जीवन के मध्यवर्गीय परिवार की हैं। यह समस्या अहम, महत्वाकांक्षा व्यक्तिवाद व कुंठा के चलते पैदा हुई हैं।जिसके केंद्र में पति अजय, पत्नी शकुन व बेटा बंटी हैं।जिसका केंद्रीय पात्र बंटी हैं।इस पारिवारिक विघटन का बंटी के ऊपर क्या प्रभाव होता हैं।और उसकी मनोस्थितियां क्या होती हैं। इसका बड़ा ही सूक्ष्म विश्लेषण उपन्यास में किया गया हैं। यह सम्पूर्ण उपन्यास 16 खंडो में विभक्त हैं।

विघटन व्यक्ति का हो या समाज का वह निश्चित रूप से बड़ी त्रासद स्थिति होती है। अजय और शकुन का विघटन व्यक्ति का विघटन होने के साथ –साथ एक परिवार का भी विघटन हैं। और यह विघटन उन दोनों को तलाक तक पहुंचा देता है। जिसका प्रभाव सबसे अधिक बंटी पर होता हैं। क्योंकि तलाक के बाद अजय मीरा से और शकुन शहर के सबसे बड़े डॉक्टर जोशी से विवाह कर लेती है। और जिंदगी की एक नई पारी की शुरुआत करते हैं।जिसमे बंटी उन दोनों से कही पीछे छूटने लगता हैं। जिसमें मां बेटे के संबंधों के बने बनाए मिथक भी टूटते नजर आते हैं । क्योंकि वह बेटे के लिए अपनी भावनाओं को कुर्बान कर देने वाली माँ नहीं हैं। बल्कि स्वतंत्र व्यक्तित्व, आकांक्षाएं और आजीविका के साधनों से तृप्त एक ऐसी मां है, जो अपने बेटे को ही हथियार के रूप में इस्तेमाल करना चाहती है।और वह सोचती हैं:– "और तब एक अजीब –सी भावना मन में आई –बंटी केवल उसका बेटा ही नहीं है, वह हथियार भी है, जिससे वह अजय को टॉर्चर कर सकती है, करेगी ।"[1] जब एक बच्चा अपने माँ

–बाप का हथियार उन्ही के खिलाफ बनने लगे। तो निश्चित ही वहां रिश्तों की भावनाएं शून्य हो जाती होगी। और व्यक्ति की अपनी इच्छा ऊपर ।बंटी इन्हीं परिस्थितियों का शिकार होता है। वह चाहे अजय हो चाहे शकुन दोनों ने बंटी से अधिक अपने विषय में सोचा और बंटी को हमेशा अपने हिसाब से रखने का प्रयास किया । जिसमें बंटी कभी रम नहीं पाता है। और उसकी मनोस्थितियां दिन पर दिन बिगड़ती चली जाती है ।

यह उपन्यास केवल बंटी की कहानी मात्र नही हैं ।बल्कि बंटी जैसे न जाने कितने और बंटियों की कहानी हैं ।जो कभी प्रत्यक्ष तो कभी अप्रत्यक्ष रूप से दिखाई दे जाती हैं। स्त्री पुरुष के विघटित संबंधों के बीच बंटी की जो त्रिशंकुवत स्थिति है। लेखिका के चिंता का मुख्य विषय वही है। लेखिका ने 'जन्मपत्री बंटी की' में इस बात की ओर इंगित करती है कि बंटी कौन है? किन परिस्थितियों में वह रहता है। और वह कहां–कहां व्याप्त है। आप कहती हैं कि:–" मुझे लगा कि बंटी किन्ही एक दो घरों में नहीं, आज के अनेक परिवारों में सांस ले रहा हैं– अलग–अलग संदर्भों में, अलग–अलग स्थितियों में। लेकिन एक बात मुझे इन बच्चों में समान लगी और वह यह कि यह सभी फालतू, गैरजरूरी और अपनी जड़ों से कटे हुए हैं।"[2] और इसकी भयावहता पर वे कहती हैं कि:–"किसी एक व्यक्ति के साथ घटी घटना दया, करुणा और भावना पैदा कर सकती है, लेकिन जब अनेक जिंदगीया एक जैसे सांचे में ही सामने आने लगती है तो दया और भावुकता के स्थान पर मन में धीरे–धीरे एक आतंक उभरने लगता है ।"[3]

बंटी को इस स्थिति तक पहुंचने के लिए बंटी की अपनी कोई भूमिका नहीं है । अजय और शकुन की अलग–अलग भूमिकाओं ने उसको यहां तक पहुंचा दिया है। उनके बीच कड़वाहट व तनाव इतना अधिक हो गया हैं कि दोनों एक ही धुरी व एक ही दिशा में चलते हुए भी जैसे परस्पर अलग दिशा व धुरी में चल रहे हैं । इसका कारण दोनों में अहम व व्यक्तिवाद हैं।जो दोनों पर इतना हावी है कि दोनो न तो इससे निकल पाते हैं न ही एक दूसरे को समझ पाते हैं। बल्कि दोनों के बीच एक अघोषित युद्ध चल रहा है। और दोनों ही एक दूसरे को हराने में लगे हुए हैं। इस टकराव का आभास शकुन के इन बातों से हो जाता है:–" उसने कई बार अपने और अजय के संबंधों के रेशे–रेशे उधेड़े हैं– सारी स्थिति में बहुत लिप्त होकर भी और सारी स्थिति से बहुत तटस्थ होकर भी, पर निष्कर्ष हमेशा एक ही निकला है कि दोनों ने एक दूसरे को कभी प्यार किया ही नहीं।शुरू के दिनों में ही एक गलत निर्णय ले डालने का एहसास दोनों की मन में बहुत साफ होकर उभर आया था,... समझौते का प्रयत्न भी दोनों में एक अंडरस्टैंडिंग पैदा करने की इच्छा से नहीं होता था, वरन एक दूसरे को पराजित करके अपने अनुकूल बना लेने की आकांक्षा से। तर्कों और बहसों में दिन बीतते थे और ठंडी लाशों की तरह लेटे–लेटे दूसरे को दुखी बेचैन और छटपटाते हुए देखने की आकांक्षा में रातें।.... दोनों ही एक–दूसरे की हर बात, हर व्यवहार और हर अदा को एक नया दांव समझने को मजबूर थे और इस मजबूरी ने दोनों के बीच की दूरी को इतना बढ़ाया, इतना बढ़ाया कि फिर बंटी भी उस खाई को पाटने के लिए सेतु नहीं बन सका, नहीं बना।"[4] इसको अगर देखें तो यह अजय

और शकुन की जिंदगी के हिस्से भर नहीं है। आज के महानगरीय जीवन कि यह एक बहुत बड़ी समस्या है। जिसमें अजय और शकुन जैसे न जाने कितने अजय और शकुन इस तरह के दलदल में जिंदा हैं। यह समस्या वाह्य न होकर आंतरिक है। जो मध्यवर्गीय परिवार में आज भी बनी हुई है। पति पत्नी के बीच संवाद की स्थिति तक नहीं रह जाती। यह संवाद हीनता किसी आर्थिक समस्या के कारण नहीं उत्पन्न होती और न किसी नैतिक समस्या के कारण। बल्कि इसका कारण अहम अति महत्वाकांक्षा कुंठा और असामंजस्य की भावना व व्यक्तिगत स्वार्थ है। जिसके परिणाम स्वरूप बंटी जैसी बच्चों की समस्याएं समाज में बनी हुई हैं।

बंटी को लेकर व उसके भविष्य को लेकर ना तो अजय को चिंता थी। और ना ही शकुन को। और दोनों ने हर परिस्थितियों को अपने ही अनुरूप ढालना चाहा हैं। बंटी को केंद्र में रखकर उन्होंने कभी कोई निर्णय नहीं लिया है। हर बात व हर निर्णय दोनों ने स्वयं को केंद्र में रखकर अपनी सुविधा के अनुसार लिया है। शकुन करती है:– "सच, हम लोग शायद बंटी को मात्र एक साधन ही समझते रहे, अपने अपने अहंम, अपनी अपनी महत्वाकांक्षाओं और अपनी अपनी कुंठाओं के संदर्भ में ही सोचते रहे। बंटी के संदर्भ में कभी सोचा ही नहीं।"[5]

समय के साथ साथ परिस्थितियां परिवर्तित होती रहती है। शकुन के साथ रहते–रहते बंटी भी अब उसे बोझ लगने लगा था। और उसे अपने जीवन में उसके कारण कठिनाइयों का यदा–कदा अनुभव भी होने लगा था । तभी बंटी को अजय के साथ कोलकाता जाने वाली बात पर कहती है कि:–" मुझे कोई एतराज नहीं होगा। सच पूछो, तो मैं खुद अब यही चाहने लगी थी कि इसे तुम्हारे पास ही भेज दू। बहुत रख लिया। अब कम से कम मैं अपनी जिंदगी जिउ.... अच्छा है, तुम्हारे और मीरा के बीच में भी दरार पडे, हर दिन एक परेशानी, हर दिन एक तूफान....।"[6] यह भी शकुन बंटी के माध्यम से अजय के जीवन मे चाहती हैं कि कुछ ख़लल पड़े।वही अजय भी कुछ कम नहीं है। वह बंटी को तो अपने साथ कोलकाता ले जाता है। पर उसके वैवाहिक जीवन में किसी भी प्रकार की कोई ख़लल न हो इसके लिए वह उसे हॉस्टल में भेज देता है। और कहता है:–" मुझे किसी और स्कूल में कोशिश नहीं करनी, उसे हॉस्टल ही भेजना है। यहां घर में रखने के लिए मैं उसे नहीं लाया हू। मैं क्या जानता नहीं कि इस घर में... ।"[7] क्या मैं जानता नहीं कि इस घर में ... यह वाक्य अपने साथ बंटी के प्रति अजय के तमाम प्रश्नों को छोड़ जाता है की बंटी की स्थिति क्या हैं ।और उसके प्रति अजय की सोच या रवैया क्या हैं।उव उसे किस रूप में देख रहा हैं ।एक समस्या के रूप में बंटी को या बेटे के रूप में।

अजय व शकुन की बातें। व उसके निर्णय अपने निर्णय हैं। अपने अपने तरीके से लिए गए थे। जिसमें उनका अपना ध्यान रखा गया है। उन दोनों ने अपनी सुविधाओं का ध्यान रखा है। ना कि बंटी की बातों का। ऐसी स्थिति में कोई बच्चा स्वयं को फालतू, बेकार, अकेला, समझने लगे तो या कि हर किसी से अलग चुपचाप रहने लगे, डरा व सहमा रहे तो उस बच्चे की नहीं बल्कि उसे निर्मित करने वाली परिस्थितियां सबसे अधिक गुनहगार है।

शकुन बंटी सारी बातें समझती है, कि बंटी को कब क्या चाहिए। उसकी इच्छा–अनिच्छा उसकी सारी बातों को जानती है। पर फिर भी उसे वह अपनी जिंदगी के सहज गति में एक बाधा पाती है। और कहती है कि:–" क्या वह यह नहीं महसूस करने लगी थी कि बंटी अब उसकी जीवन की सहज गति में एक रुकावट बन गया है ? जिस नई जिंदगी की शुरुआत का सारा आयोजन उसने कर डाला, वह शुरू होकर भी जैसे शुरू नहीं हो पा रही है कि बंटी उसमें जब तक दरार डाल देता है।"[8] देखना यहां पर यह है कि बंटी के सहज जीवन में अजय व शकुन बाधा डालते हैं। या बंटी उनके जीवन में बाधा डाल रहा है। बंटी दोनों के लिए एक अवांछनीय मजबूरी बन गया है। दोनों उसे अपने सहज जीवन के गति में बाधक ही पातें हैं। फिर भी उसे अपनाने का प्रयत्न करते हैं। भले ही एक दूसरे को तंग करने के लिए ही क्यों न करें। जो बंटी उन दोनों को जोड़ने का सेतु न बन सका वह बंटी उन दोनों के मध्य एक अवांछनीय तत्त्व जरूर बनकर रह गया है।

बंटी एक खंडित मन वाला लड़का है। वह हर जगह से स्वयं को टुकड़ों में ही पाता है। चाहे मम्मी के साथ हो, चाहे पापा के साथ। वह स्वयं को कभी पूरा नहीं पाता है। कुछ ना कुछ अधूरापन उसके साथ –साथ चलता रहता है। और इन्हीं सब से वह धीरे धीरे हर जगह से कटता चलता है। और जिद्दी गुस्सैल बालक बनता चलता है। इन परिस्थितियों मे रहते– रहते उसे धीरे–धीरे स्वयं लगने लगता है कि वह हर किसी के बीच एक फालतू की चीज बनकर रह गया है। इस बात का एहसास उसे बार–बार होने लगता है। और वह जब तब कहता है:–

" हां, बंटी तो है ही फालतू।"

"तीसरा बच्चा फालतू बच्चा– तीसरा बंटी फालतू बंटी।"

"नहीं चाहिए हमें ऐसी अलमारी घर की सारा आलतू फालतू सामान मेरे लिए।"

"एक मैं ही तो हूं फालतू।"[9]

मां बाप बच्चों की जिंदगी के दो पार्ट होते हैं।दो धुरी होते हैं। जिनके बीच में बच्चा निरंतर चलता रहता है। और जब यही दोनो पार्ट अपने अपने स्वार्थ के लिए बच्चे का इस्तेमाल करने लगे तो बच्चा उन दो पाटों के बीच में पीसने लगता है। उसकी मनोदशाए ,मनोस्थितियां बिगड़ने लगती है। यही बात बंटी के साथ घटित होती है।

अजय और शकुन के दसवर्षों का वैवाहिक जीवन कितना कटु और अंधकारमय था।और वह कितना कमजोर था।इसका अंदाजा शकुन की बातों से लगया जा सकता हैं:– "एक अध्याय था, जिसे समाप्त होना था और वह हो गया ।दस वर्ष का यह विवाहित जीवन– एक अंधेरी सुरंग में चलते चले जाने की अनुभूत से भिन्न न था। आज जैसे एकाएक वह उसके अंतिम छोर पर आ गई है। पर आ पहुंचने का संतोष भी तो नहीं है ,धकेल दिए जाने

की विवश कचोट–भर है। पर कैसा है यह छोर ? न प्रकाश, न वह खुलापन, न मुक्ति का एहसास।लगता है जैसे इस सुरंग ने उसे एक दूसरी सुरंग के मुहाने पर छोड़ दिया है – फिर एक और यात्रा– वैसा ही अंधकार वैसा ही अकेलापन।"[10] पृष्ठ संख्या 38 यह जो जीवन का अकेलापन है। और उसमें व्याप्त अंधेरा है। यह खाली शकुन के जिंदगी तक ही व्याप्त नही हैं। यह निश्चित ही तलाक शुदा महिलाओं के जीवन की बड़ी समस्या हैं।

उपन्यास की पूरी कहानी शकुन अजय व बंटी के मध्य चलती रहती है। जिसमें मां बेटे का प्यार, पति पत्नी के संबंध, पिता पुत्र के संबंध के साथ –साथ अजय व शकुन के नए संबधों के बीच बंटी के प्रति अजय व शकुन के रवैये के मार्मिक आख्यान हैं। और इस पूरे प्रकरण को देखते हुए इस उपन्यास की प्रासंगिकता को यदि हम देखे तो वह इस प्रकार के बनते बिगड़ते रिश्तो को बचाने के साथ–साथ उपेक्षित होते बंटी को बचाने में है।

संदर्भ ग्रंथ

1.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.46

2.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.8

3.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.8

4.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.37

5.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.187

6.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.187

7.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.204

8.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.170

9.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010पृ.146,149,145,142

10.मन्नू भंडारी, आपका बंटी राधाकृष्ण प्रकाशन आवृत्ति चौथी 2010 पृ.38

शोधार्थी, हिंदी विभाग, महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा, गुजरात,

मो.नं.9265327904